दो शब्द

'ज्ञानवानेन सुखवान् ज्ञानवानेव जीवति।
ज्ञानवानेव बलवान् तस्मात् ज्ञानमयो भव।।'

वर्तमान समय की सबसे बड़ी समस्याओं में से एक–भ्रष्टाचार। आज प्रत्येक व्यक्ति इससे प्रभावित है, परेशान हैं और सबसे बड़ी बात हर व्यक्ति इस भ्रष्टाचार का किसी न किसी रूप में कारण भी है। जो बच रहा है, वह ईमानदारी का दावा कर सकता है, तब तक, जब तक कि उसे भ्रष्ट बनने का मौका नहीं मिलता है। आश्चर्य की बात है कि जो आपको भ्रष्टाचार की निंदा करता मिले वो आगे स्वयं इसमें लिप्त पाया जाता है इसके लिए कोई सरकार को दोष दे सकता है, कोई परम्परा को दोष दे सकता है, किन्तु, इसके लिए कोई सामूहिक और ठोस पहल होती कहीं दिखती नहीं। कहीं कोई आवाज इसके खिलाफ उठती भी है तो आगे वो स्वयं ही भ्रष्टाचार मिटाने की आड़ में बड़ा भ्रष्टाचारी बन जाता है और भ्रष्टाचार की जड़ें और भी गहरी हो जाती है। इसका सबसे बड़ा कारण अवसरवादिता और सामूहिक विश्वास की कमी है। एक-दूसरे के प्रति बेमतलब की वैमनस्यता और जलन की भावना भी है, जिसके कारण आज के वर्तमान समय में हर व्यक्ति अपने दायरे में सिमटता, सिकुड़ता जा रहा है.उसकी सीमा,उसका प्रसार धीरे-धीरे कम होता जा रहा है।

कहते हैं कि- 'कविर्मनीषी परिभू स्वयंभू'। कवि और मनीषी स्वयंभू होते हैं, युगद्रष्टा होते हैं, तभी तो सैकड़ों वर्ष पूर्व ही भक्तशिरोमणि सूरदास ने अपनी बंद आँखों से आज के युग का सत्य देख और लिख दिया था-

'निकल रही है उर ते आह, तक रहे सब तेरी राह,
चातक खड़ा चोंच खोले है, संपुट खोले सीप पड़ी,
मैं अपना घट लिये खड़ा हूँ, अपनी-अपनी हमें पड़ी'।

सूरदास ईमानदार थे, उन्होंने युगीन सत्य से अपने को परे नहीं रखा और न ही युगीन समस्याओं को अनदेखा किया, बल्कि इन समस्याओं का विरोध भी किया।

इस सन्दर्भ में साहित्य और साहित्यकार की भूमिका को रेखांकित करते हुए गोपाल सिंह नेपालीजी ने अपनी जिम्मेदारियों और कविकर्म की भूमिका तथा महत्ता का उल्लेख करते हुए लिखा है कि-

'हम धरती क्या, आकाश बदलने वाले हैं। हम तो कवि हैं, इतिहास बदलने वाले हैं।।
हर क्रांति कलम से शुरू हुई, सम्पूर्ण हुई। चट्टान जुल्म की, कलम चली तो चूर्ण हुई।
हम कलम चला कर, त्रास बदलने वाले हैं। हम तो कवि हैं, इतिहास बदलने वाले हैं।।
जब-जब जनता पर दुःख की बदली छाई है। तब-तब हमने, विप्लव बिजली चमकाई है।
मानवता का परिहास बदलने वाले हैं । हम तो कवि हैं, इतिहास बदलने वाले है'।।

लेकिन साहित्यकार और आम लोग दोनों ही आज जिस आधुनिक समाज के अंग हैं, इससे प्रभावित हुए बगैर और इसको प्रभावित किए बिना नहीं रह सकते है। आज इस भ्रष्टाचार के फैलाव से हमारा साहित्य भी वंचित नहीं रहा। अक्सर सोशल मिडिया के माध्यम से साहित्यिक भ्रष्टाचार के विभिन्न प्रकरण समक्ष आते रहते हैं।

वर्तमान में हमारे समाज का हर सदस्य अपने लिए सुख,शांति, असीमित संपत्ति, बिना मेहनत और लघु प्रयास व् अल्प समय में ही बहुत बड़ा बनने की चाहत रखता है जो कि इस समस्या का मूल है,लेकिन विडम्बना है कि वही व्यक्ति दूसरों से ईमानदारी की अपेक्षा रखता है,लेकिन स्वयं उसके लिए ईमानदारी के कोई मायने नहीं है। आज के मनुष्य को सबकुछ बैठे-बिठाए चाहिए। साहित्यकार भी मनुष्य होने के नाते इसका अपवाद नहीं हैं। कुछ आवाज उठती भी है तो, भूखे पेट की मज़बूरी की तरह जल्द ही, अपनी मजबूरियों के तहखाने में खो जाती है।

सुदामा पाण्डेय 'धूमिल' ने इसी को इंगित करके लिखा है कि-

'मैं कोई ठंढा आदमी नहीं हूँ
मेरे अन्दर भी आग है-
मगर वह

भभककर बाहर नहीं आती
क्योंकि उसके चारों तरफ चक्कर काटता हुआ
एक 'पूंजीवादी' दिमाग है
जो परिवर्तन तो चाहता है
मगर आहिस्ता-आहिस्ता
कुछ इस तरह कि चीजों की शालीनता बनी रहे।
कुछ इस तरह कि कांख भी ढकी रहे
और विरोध में उठे हुए हाथ की
मुट्ठी भी तनी रहे...
और यही वजह है कि बात
फैलने की हद तक आते-आते रुक जाती है
क्योंकि हर बार
चंद टुच्ची सुविधाओं के लालच के सामने
अभियोग की भाषा चुक जाती है'।
आज के वर्तमान परिदृश्य में ऐसा ही देखने को मिलता भी है।

मजाज ने लिखा कि –

'बहे जमीं पे जो मेरा लहू
तो गम मत कर
इसी जमीं से महकते गुलाब पैदा कर
तू इन्कलाब की आमद का इंतजार न कर
जो हो सके तो अभी इंकलाब पैदा कर' ।।

आज जरुरत है इस समस्या के खिलाफ एक बड़ी सामाजिक क्रांति और जागरूकता की जिससे भ्रष्टाचार की इस समस्या का निराकरण किया जा सके। इसमें हम सभी साहित्यिकों का अहम् योगदान हो सकता है। क्योंकि साहित्य के माध्यम से प्रस्तुत विचार सहज स्वीकार्य होता है।

जून माह हिन्दी के आधुनिक प्रगतिवादी काव्यधारा के सुप्रसिद्ध, लब्धप्रतिष्ठित हस्ताक्षर वैद्यनाथ मिश्र 'यात्री' बाबा नागार्जुन का जन्म मास है। 30 जून 1911 को इनका जन्म और 5 नवंबर 1998 को इनकी मृत्यु हुई थी। इनके बचपन का नाम – ठक्कन मिसिर था। इन्होंने हिन्दी के अलावा बांग्ला, मैथिली और संस्कृत में रचनाएँ की हैं। ये अनेक भाषाओँ के विद्वान् थे। इनकी मैथिली की रचना- 'पत्रहीन नग्न गाछ' के लिए 1969 में साहित्य अकादमी पुरस्कार प्राप्त है। उनकी प्रसिद्द और प्रकाशित कृतियाँ निम्लिखित हैं-

प्रकाशित कृतियाँ-

काव्य संग्रह-

1. युगधारा -1953
2. सतरंगे पंखों वाली -1959
3. प्यासी पथराई आँखें -1962
4. तालाब की मछलियाँ -1974
5. हरिजन गाथा-1977
6. तुमने कहा था -1980
7. खिचड़ी विप्लव देखा हमने -1980
8. हजार-हजार बाँहों वाली -1981
9. पुरानी जूतियों का कोरस -1983
10. रत्नगर्भ -1984
11. ऐसे भी हम क्या! ऐसे भी तुम क्या!! -1985
12. आखिर ऐसा क्या कह दिया हमने-1986
13. इस गुब्बारे की छाया में -1990
14. भूल जाओ पुराने सपने -1994
15. अपने खेत में -1997

प्रबंध काव्य-

1. भस्मांकुर -1970 2. भूमिजा

निबंध- हिमालय की बेटियाँ

उपन्यास-

1. रतिनाथ की चाची -1948 2. बलचनमा-1952
3. नयी पौध -1953 4. बाबा बटेसरनाथ -1954
5. वरुण के बेटे -1956 6. दुखमोचन -1956
7. कुंभीपाक-1960 8. हीरक जयन्ती -1962
9. उग्रतारा -1963 10. जमनिया का बाबा -1968
11. गरीबदास -1990

संस्मरण- एक व्यक्ति: एक युग -1963

कहानी संग्रह- आसमान में चन्दा तैरे -1982

आलेख संग्रह-

1. अन्नहीनम् क्रियाहीनम् -1983 2. बम्भोलेनाथ -1987

बाल साहित्य-

1. कथा मंजरी भाग-1 2. कथा मंजरी भाग-2
3. मर्यादा पुरुषोत्तम राम -1955 4. विद्यापति की कहानियाँ -1964

मैथिली रचनाएँ-

1. चित्रा (कविता-संग्रह) -1949 2. पत्रहीन नग्न गाछ-1967
3. पका है यह कटहल -1995 4. पारो (उपन्यास) -1946
5. नवतुरिया -1654

बाङ्ला रचनाएँ- मैं मिलिट्री का बूढ़ा घोड़ा -1997.

नागार्जुन एक जनकवि थे। उनकी प्रसिद्द उक्ति है-

'जनता मुझसे पूछ रही है क्या बतलाऊँ
जनकवि हूँ मैं साफ कहूँगा क्यों हकलाऊँ'।।

आज जरुरत ऐसे ही जनकवि/साहित्यकारों की है, जो जनता की समस्याओं और सरोकारों को मजबूती से बिना हकलाए, बिना किसी लोभ या डर के उठा सके। बाबा नागार्जुन को शत-शत नमन।

और अंत में, सिर्फ इतना ही कि इस पत्रिका के प्रकाशन में जिनका भी प्रत्यक्ष या परोक्ष योगदान रहा है, उन सभी विद्वतजनों को धन्यवाद,साधुवाद। इस पत्रिका में जो भी अच्छा है, उसका श्रेय आप सभी गुरुजनों, सुधी पाठकों और साहित्यिकों का है और जो कुछ भी त्रुटि रह गई है उसकी जिम्मेदारी मेरे ऊपर है। अस्तु। इति शुभम।

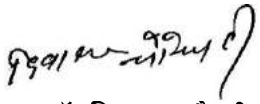

डॉ. दिवाकर चौधरी
प्रधान संपादक